भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 04-05-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- तस्मिन्नेव ग्रामे एका अपरा लुब्धा वृद्धा न्यवसत् ।तस्या:अपि एका पुत्री आसीत्।
  ईर्ष्यया सा तस्य स्वर्णकाकस्य रहस्तमभिज्ञातवती। सूर्यातपे तण्डुलान्निक्षिप्य तयापि स्वसुता रक्षार्थं नियुक्ता ।तथैव स्वर्णपक्ष: काक: तण्डुलान् भक्षयन् तामपि तत्रैवाकारत् ।
- शब्दार्थ –
  तस्मिन्नेव – उसी ,अपरा -दूसरी , न्यवसत् -रहती थी, रहस्यम् – गुप्त बातों को अभिज्ञातवती – जान गई,सूर्यातपे -सूर्य की धूप मे, आकारयत् -बुलाया
- सरलार्थ - उसी गांव में एक दूसरी लालची लालची बुढ़िया स्त्री रहती थी। उसकी भी एक बेटी थी ईर्ष्या बस उसने उस सोने के कौवे का रहस्य जान लिया सूरज की धूप में चावलों को रखकर फैला कर उसने भी अपनी बेटी को उसकी रक्षा के लिए बिठ( नियुक्त कर दिया) वैसे ही सोने की पंख वाले को देने चावलों को खाते हुए उसको लड़की को भी वही बुलाया ।